

## इजराइल-हमास : अनवरत संघर्ष

तरूण कुमार साहू\*

<https://doi.org/10.61703/RE-ps-Vyt-710-24-8>

### संक्षेप

इजराइल-हमास संघर्ष व्यापक इजरायली-फिलिस्तीनी संघर्ष का एक महत्वपूर्ण और स्थायी पहलू है, जो हिंसा के बार-बार चक्र, गहरे राजनीतिक और क्षेत्रीय विवादों और गंभीर मानवीय परिणामों से चिह्नित है। 1987 में प्रथम इतिहादा के दौरान हमास की स्थापना से शुरू हुए इस संघर्ष की तीव्रता कई बार बढ़ चुकी है, जिसमें 2008, 2014 और 2021 में बड़े टकराव शामिल हैं। इन संघर्षों के परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर हताहत हुए हैं, विशेष रूप से गाजा में नागरिकों के बीच, जिसने इस क्षेत्र में मानवीय संकट को बढ़ा दिया है। स्थायी शांति प्राप्त करने के प्रयास काफी हद तक असफल रहे हैं, अंतर्राष्ट्रीय पक्ष समाधान पर विभाजित हैं। चल रहे संघर्ष का क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक भू-राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। यह संघर्ष के अंतर्निहित कारणों को संबोधित करने वाले एक व्यापक और टिकाऊ समाधान की अपेक्षा रखता है, जो कि फिलहाल दूर की कौड़ी है।

कुंजी शब्द : अल-अक्सा मस्जिद, नाकाबंदी, युद्धविराम, गाजा पट्टी, हमास, मानवीय संकट, इस्लामवादी आंदोलन, इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष, यरुशलम, शांति प्रक्रिया, दो-राज्य समाधान, संयुक्त राष्ट्र, पश्चिमी तट।

### इजराइल का गठन और प्रारंभिक अरब-इजरायली संघर्ष

प्रथम विश्व युद्ध के बाद, राष्ट्र संघ ने ब्रिटेन को फिलिस्तीन पर एक मैन्डेट दिया। इस अवधि के दौरान, इस क्षेत्र में यहूदी आप्रवासन में काफी वृद्धि हुई, जो ज़ायोनी आंदोलन से प्रेरित था, जिसने फिलिस्तीन में एक यहूदी मातृभूमि स्थापित करने की मांग की थी। यहूदी प्रवासियों के इस प्रवाह ने अरब आबादी के साथ बढ़ते तनाव को जन्म दिया, जिन्होंने अपनी मातृभूमि माने जाने वाले क्षेत्र में एक यहूदी राज्य की स्थापना का विरोध किया।

1947 में, संयुक्त राष्ट्र ने यरुशलम को अंतर्राष्ट्रीय प्रशासन के अधीन रखते हुए अलग-अलग यहूदी और अरब राज्य बनाने के लिए एक विभाजन योजना का प्रस्ताव रखा। यहूदी समुदाय ने योजना को स्वीकार कर लिया, लेकिन अरब राज्यों और फिलिस्तीनी अरबों ने इसे अस्वीकार कर दिया, जिसके कारण इजराइल की स्वतंत्रता की घोषणा के बाद 1948 में अरब-इजरायली युद्ध छिड़ गया। युद्ध के परिणामस्वरूप सीमाओं का महत्वपूर्ण पुनर्निर्धारण हुआ, जिसमें इजरायल ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा

\*सहायक प्रोफेसर, शासकीय वी.वाई.टी. पीजी ऑटोनामस कॉलेज, दुर्ग, छत्तीसगढ़

प्रस्तावित सीमाओं से आगे विस्तार किया और लगभग 750,000 फिलिस्तीनी अरब शरणार्थी बन गए, इस घटना को नकबा या "आपदा" के रूप में जाना जाता है (मॉरिस, 2008)।

कब्जा और फिलिस्तीनी प्रतिरोध का उदय

1967 के छह दिवसीय युद्ध ने एक और महत्वपूर्ण मोड़ दिया, जब इजराइल ने वेस्ट बैंक, गाजा पट्टी, पूर्वी यरुशलम और गोलान हाइट्स पर कब्जा कर लिया। ये क्षेत्र, विशेष रूप से वेस्ट बैंक और गाजा, इजराइली-फिलिस्तीनी संघर्ष के केंद्र बन गए, क्योंकि वे इजराइली सैन्य कब्जे के तहत रहने वाली बड़ी फिलिस्तीनी आबादी के घर थे। इस कब्जे के कारण फिलिस्तीनियों के बीच व्यापक प्रतिरोध हुआ, जिसकी परिणति प्रथम इतिफादा (1987-1993) में हुई, जो सविनय अवज्ञा, विरोध और हिंसक टकरावों की विशेषता वाला इजराइली नियंत्रण के खिलाफ एक व्यापक विद्रोह था। यह प्रथम इतिफादा के दौरान ही मुस्लिम ब्रदरहुड की एक शाखा के रूप में हमास की स्थापना की गई थी। धर्मनिरपेक्ष फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन (पीएलओ) के विपरीत, जो फिलिस्तीनी राजनीति में प्रमुख शक्ति थी, हमास ने फिलिस्तीनी राष्ट्रवाद को इस्लामवादी विचारधारा के साथ जोड़ दिया। हमास ने इजराइल के साथ किसी भी समझौते को अस्वीकार कर दिया और पूरे ऐतिहासिक फिलिस्तीन में एक इस्लामी राज्य की स्थापना का आह्वान किया। इस रुख ने इजरायल और हमास के बीच स्थायी संघर्ष के लिए मंच तैयार किया (मिल्टन-एडवर्ड्स और फेरेल, 2010)।

ओस्लो समझौते और फिलिस्तीनी नेतृत्व का विखंडन

1990 के दशक की शुरुआत में ओस्लो समझौते के माध्यम से इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष को हल करने के लिए एक बड़ा प्रयास देखा गया, जो इजरायल और पीएलओ के बीच समझौतों की एक श्रृंखला थी जिसका उद्देश्य शांति के लिए एक रूपरेखा स्थापित करना था। समझौतों के कारण फिलिस्तीनी प्राधिकरण (पीए) का निर्माण हुआ, जिसे पश्चिमी तट और गाजा के कुछ हिस्सों में सीमित स्वशासन दिया गया था। हालाँकि, हमास ने ओस्लो प्रक्रिया का विरोध किया, इसे फिलिस्तीनी अधिकारों के साथ विश्वासघात और इजरायल की वैधता की मान्यता के रूप में देखा। 1995 में एक यहूदी चरमपंथी द्वारा इजरायल के प्रधानमंत्री यित्ज़ाक राबिन की हत्या और उसके बाद इजरायल में राजनीतिक बदलाव, निरंतर हिंसा और बस्तियों, शरणार्थियों और यरुशलम की स्थिति जैसे मुख्य मुद्दों को हल करने में विफलता के कारण शांति प्रक्रिया ध्वस्त हो गई। दूसरा इतिफादा (2000-2005), जो पहले की तुलना में कहीं अधिक हिंसक था, ने इजरायलियों और फिलिस्तीनियों के बीच विभाजन को और गहरा कर दिया (श्लेम, 2001)।

### अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी और गतिरोध

मिस्र और कतर के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने इजरायल और हमास के बीच मध्यस्थता करने के लिए कई प्रयास किए हैं, जिन्होंने युद्ध विराम कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, ये युद्ध विराम अस्थायी रहे हैं, और अंतर्निहित राजनीतिक और क्षेत्रीय विवाद अनसुलझे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका पारंपरिक रूप से इजरायल का एक मजबूत समर्थक रहा है, जिसने इसे महत्वपूर्ण सैन्य सहायता और कूटनीतिक समर्थन प्रदान किया है। इसके विपरीत, संयुक्त राष्ट्र और यूरोपीय संघ सहित अन्य अंतर्राष्ट्रीय अभिनेता इजरायल की नीतियों के बारे में अधिक आलोचनात्मक रहे हैं, विशेष रूप से वेस्ट बैंक में बस्तियों के विस्तार और गाजा में मानवीय स्थिति के संबंध में (गुजांस्की और लिंडेनस्ट्रॉस, 2020)। इजरायल-हमास संघर्ष मध्य पूर्व में व्यापक शांति प्रयासों के लिए एक बड़ी बाधा बना हुआ है।

### प्रमुख घटनाएँ और वृद्धि

इजराइल और हमास के बीच संघर्ष में कई वृद्धि देखी गई है, जिनमें से कुछ सबसे उल्लेखनीय हैं 2008-2009 गाजा युद्ध, 2012 ऑपरेशन पिलर ऑफ़ डिफेंस, 2014 गाजा युद्ध और 2021 संघर्ष। ये वृद्धि आम तौर पर गाजा से इजराइल में रॉकेट फायर से शुरू होती है, जिसके बाद गाजा पर इजराइली हवाई हमले होते हैं। हिंसा के प्रत्येक दौर में महत्वपूर्ण नागरिक हताहत हुए हैं और व्यापक विनाश हुआ है, विशेष रूप से गाजा पट्टी में, जो घनी आबादी वाला और गरीब है (ब्यूमोंट, 2021)।

मई 2021 में, यरुशलम में तनाव, विशेष रूप से अल-अक्सा मस्जिद के आसपास, हाल के वर्षों में सबसे तीव्र संघर्षों में से एक में बढ़ गया। हमास ने इजराइल में हजारों रॉकेट दागे, और इजराइल ने गाजा पर व्यापक हवाई हमलों के साथ जवाब दिया। इस संघर्ष में 250 से ज्यादा फिलिस्तीनी और 13 इजरायली मारे गए, जो हताहतों की विषमता को उजागर करता है जो अक्सर इन संघर्षों की विशेषता होती है (ह्यूमन राइट्स वॉच, 2021)।

मानवीय प्रभाव । इजराइल-हमास संघर्ष का मानवीय प्रभाव विनाशकारी रहा है, खास तौर पर गाजा के निवासियों के लिए। 2007 में हमास के नियंत्रण में आने के बाद से गाजा इजरायल और मिस्र द्वारा नाकाबंदी के तहत है, जिसके कारण लोगों और सामानों की आवाजाही पर गंभीर प्रतिबंध लगे हैं और मानवीय संकट में योगदान दे रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र ने अक्सर गाजा में भयानक परिस्थितियों को उजागर किया है, जहाँ स्वच्छ पानी, बिजली और चिकित्सा देखभाल तक पहुँच बहुत सीमित है (UNRWA, 2022)। दोनों पक्षों के नागरिकों को नुकसान उठाना पड़ा है, गाजा के नज़दीक इजरायली समुदाय अक्सर रॉकेट फायर के खतरे में रहते हैं और गाजा में फिलिस्तीनी इजरायली हवाई हमलों का खामियाजा भुगत रहे हैं। संघर्ष ने हजारों लोगों को विस्थापित भी किया है, घरों और बुनियादी ढाँचे को नष्ट किया है और दोनों आबादी पर स्थायी मनोवैज्ञानिक निशान छोड़े हैं (बी'सेलम, 2021)।

7 अक्टूबर 2023 से अब तक 46,083 फिलिस्तीनी और 1,139 लोग इजरायल में मारे जा चुके हैं।

गाजा में मारे गए: कम से कम 45,259 लोग, जिनमें 17,492 बच्चे शामिल थे, घायल: 107,627 से अधिक लोग, लापता: 11,000 से अधिक। कब्जे वाले पश्चिमी तट में फिलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार मारे गए: कम से कम 817 लोग, जिनमें कम से कम 169 बच्चे शामिल थे, घायल: 6,250 से अधिक लोग। इजराइल में मारे गए: 1,139 लोग, घायल: कम से कम 8,730। गाजा के आधे से अधिक घर (क्षतिग्रस्त या नष्ट) 80 प्रतिशत वाणिज्यिक सुविधाएं, 88 प्रतिशत स्कूल भवन, स्वास्थ्य सुविधाएं - 36 में से 17 अस्पताल आंशिक रूप से कार्यात्मक हैं, 68 प्रतिशत सड़क नेटवर्क, 68 प्रतिशत कृषि भूमि बरबाद हो चुकी है। (अलजजीरा, 2023)

### शांति की दिशा में प्रयास

इजराइल-हमास संघर्ष को हल करने के प्रयास जारी हैं, लेकिन वे काफी हद तक असफल रहे हैं। मिस्र और कतर सहित अंतर्राष्ट्रीय अभिनेताओं द्वारा कई युद्धविराम किए गए हैं, लेकिन ये अक्सर अस्थायी रहे हैं। व्यापक इजराइली-फिलिस्तीनी शांति प्रक्रिया भी रुकी हुई है, जिसमें यरुशलम की स्थिति, फिलिस्तीनी शरणार्थियों के लिए वापसी का अधिकार और संभावित फिलिस्तीनी राज्य की सीमाएँ जैसे बुनियादी मुद्दे अनसुलझे रह गए हैं (प्रेसमैन, 2021)। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय इस मुद्दे पर विभाजित है, कुछ देश इजराइल के आत्मरक्षा के अधिकार का समर्थन करते हैं और अन्य इसके कार्यों की निंदा करते हैं क्योंकि यह अनुपातहीन और अंतर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है। संयुक्त राज्य अमेरिका ऐतिहासिक रूप से इजराइल का एक मजबूत समर्थक रहा है, जबकि संयुक्त राष्ट्र सहित कई अन्य देशों और संगठनों ने कब्जे को समाप्त करने और दो-राज्य समाधान को स्थायी शांति के लिए एकमात्र व्यवहार्य मार्ग के रूप में बुलाया है (गुजांस्की और लिंडेनस्ट्रॉस, 2020)।

### निष्कर्ष

इजराइल-हमास संघर्ष एक गहरा और जटिल मुद्दा बना हुआ है, जिसकी जड़ें दशकों से चले आ रहे राजनीतिक, क्षेत्रीय और वैचारिक विवादों में हैं। गाजा में हमास और पश्चिमी तट में फिलिस्तीनी प्राधिकरण के बीच विभाजन शांति के लिए एकीकृत फिलिस्तीनी दृष्टिकोण के प्रयासों को जटिल बनाता है। युद्ध विराम और सहायता प्रदान करने में मध्यस्थता करने में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की भूमिका, अक्सर खंडित रही है, जिससे असंगत कूटनीतिक प्रयास हुए हैं। गाजा में चल रहे मानवीय संकट ने स्थिति को और खराब कर दिया है, जिससे अस्थिरता और बढ़ गई है और शांति की संभावनाएँ और भी अधिक मायावी हो गई हैं। हमास और हिजबुल्ला जैसे संगठनों को यह समझना होगा कि हथियार और हिंसा से कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता। हथियारबंद आन्दोलनों और हिंसा को कुचलना आसान होता है लेकिन अहिंसक आन्दोलनों को नहीं। क्योंकि अहिंसक आन्दोलनों को विश्व ढर के नागरिक समाजों की और लोकतांत्रिक देशों की सहानुभूति प्राप्त होती है। उनको गांधीवादी तरीका अपनाना पड़ेगा। गांधीवादी स्वराज के मार्ग को अपनाना होगा क्योंकि

आज उदार लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में राज्य की दमनकारी शक्ति के खिलाफ जो भी बहुलवादी और जनांदोलन होते हैं, वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गांधी के स्वराज से प्रभावित होते हैं। आज का नागरिक समाज जिस तरह राज्य की दमनकारी शक्ति के खिलाफ खड़ा है, वह गांधी के स्वराज का क्रियान्वयन ही है। (हुसैन, 2023) अतः अहिंसा के सफल गांधीवादी स्वराज माडल को अपनाना होगा। दूसरी ओर इसराइल को भी यह समझना होगा कि दमन, शोषण से और हिंसा द्वारा किसी भी समाज और उसकी संपूर्ण आबादी को नष्ट नहीं किया जा सकता इतिहास में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं है। जिस तरह इसराइल एक सच्चाई है उसी तरह यह भी एक सच्चाई है कि इसराइल ने फिलिस्तीनियों की जमीन पर अधिकार किया है। इसलिए इसराइल को फिलिस्तीनियों के समूल नाश के सपने को त्याग कर सह अस्तित्व को अपनाना पड़ेगा उन्हें स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के लोकतांत्रिक समाज बहुलवादी समाज हैं जिम बहुसंस्कृतिवाद एक स्थापित सत्य है। बहुसंस्कृतिवाद बहुसांस्कृतिक समाजों का प्रभुत्व और आत्मसात के विरुद्ध समायोजन या वकालत है।...पहले की एक-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना पीछे छूट गई, जिससे बहुसांस्कृतिक समाजों के लिए रास्ता साफ हो गया। लगातार वैश्वीकृत हो रही विश्व व्यवस्था में, हर राज्य को किसी न किसी तरह से बहुसंस्कृतिवाद को शामिल करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। (हुसैन, 2023) अतः बहुसंस्कृतिवाद को मान्यता देते हुए और बहुलवाद को अपनाते हुए सह अस्तित्व को स्वीकार करना होगा उसके बिना शांति की स्थापना संभव नहीं है। स्थायी समाधान के लिए, आपसी मान्यता, सीमाओं, यरुशलम की स्थिति और फिलिस्तीनी शरणार्थियों के अधिकारों के मुख्य मुद्दों को सम्बोधित करना होगा। दोनो पक्षों को सह अस्तित्व को स्वीकार करना होगा, यही एक मात्र समाधान संभव है।

#### संदर्भ

##### 1. अलजजीरा

<https://www.google.com/amp/s/www.aljazeera.com/amp/news/longform/2023/10/9/israel-hamas-war-in-maps-and-charts-live-tracker>

2. बी'सेलम. (2021). गाजा पट्टी: इजरायल की नाकाबंदी और चल रहा मानवीय संकट। <https://www.btselem.org>

3. गुजांस्की, वार्ड., और लिंडेनस्ट्रॉम, जी. (2020). इजरायल-हमास संघर्ष और मध्य पूर्व के लिए संघर्ष। INSS इनसाइट। <https://www.inss.org.il>

4. हुसैन एस .( 2023) : गांधीवादी स्वराज: एक सतत प्रक्रिया, रिसर्च एक्सप्रेसन आईएसएसएन 2456-3455 खंड VI, अंक 8, मार्च 2023  
[https://doi.org/10.61703/10.61703/vol-6Vyt8\\_3](https://doi.org/10.61703/10.61703/vol-6Vyt8_3)
5. हुसैन एस एवं सुखदेवे एस. (2023) : बहुसंस्कृतिवाद और प्रवास: मोदूद का दृष्टिकोण, रिसर्च एक्सप्रेसन आईएसएसएन 2456-3455 वॉल्यूम VI, अंक 8, मार्च 2023 पृ 22-23 [https://doi.org/10.61703/10.61703/vol-6Vyt8\\_4](https://doi.org/10.61703/10.61703/vol-6Vyt8_4)
6. ह्यूमन राइट्स वॉच. (2021). इजरायल और फिलिस्तीन: 2021 की घटनाएँ <https://www.hrw.org>
7. मिल्टन-एडवर्ड्स, बी., और फैरेल, एस. (2010). हमास: इस्लामिक प्रतिरोध आंदोलन। पॉलिटी प्रेसा पृष्ठ 12-45 (ऐतिहासिक पृष्ठभूमि) पृष्ठ 85-120 (हमास की विचारधारा और रणनीति)
8. मॉरिस, बी. (2008)। 1948: प्रथम अरब-इजरायल युद्ध का इतिहास। येल यूनिवर्सिटी प्रेसा पृष्ठ 1-50 (युद्ध का संदर्भ और प्रस्तावना), पृष्ठ 180-220 (युद्ध के बाद)
9. प्रेसमैन, जे. (2021)। इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष का व्यापक संदर्भ। जर्नल ऑफ पीस रिसर्च, 58(2), पृष्ठ 143-150 (ऐतिहासिक अवलोकन), पृष्ठ 151-156 (शांति प्रयासों पर प्रभाव)
10. रॉय, एस. (2011)। गाजा में हमास और नागरिक समाज: इस्लामिस्ट सामाजिक क्षेत्र को शामिल करना। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेसा पृष्ठ 67-100 (हमास का उदय और शासन), पृष्ठ 150-175 (नाकाबंदी और मानवीय संकट का प्रभाव)
11. श्लेम, ए. (2001)। आयरन वॉल: इजरायल और अरब दुनिया। डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी। पृष्ठ 20-60 (शुरुआती संघर्ष और शांति प्रयास), पृष्ठ 120-160 (ओस्लो समझौते और उनके परिणाम)
12. यूएनआरडब्ल्यूए। (2022)। गाजा: नाकाबंदी का मानवीय प्रभाव। <https://www.unrwa.org>